शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसंबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इन्दौर महानगर के मालवी कवियों की रचनाधर्मिता

विनोद वर्मा (शोधार्थी)
डॉ.पुरुषोत्तम दुबे (निर्देशक)
भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

लोकगीत आदिमानव का उल्लासमय संगीत है। मानव हृदय से निकले भाव लोकगीत हो जाते हैं। ये हमारे विकास की अमूल्य निधि के समान हैं। लोकभाषा में अभिव्यक्त गीतों में भावों का अपरा भंडार है। ये लोकगीत विशाल जनसमुदाय की अनुभूतियों से आप्लावित हैं। लोकभाषा मालवा और मालवा के समीपवर्ती क्षेत्रों की मातृभाषाएं मालवी और मालवी की सहोदरा निमाड़ी हैं। भौगोलिक दृष्टि से पारस्परिक रूप में मालवांचल के सीमावर्ती क्षेत्रों राजस्थान की मेवाड़ी, पुराने मध्यप्रदेश और मध्यभारत की निमाड़ी तथा मध्यभारत के ही सुदूर अंचलों में वासित विभिन्न जनजाति के लोगों द्वारा बोली जाने वाली बोली 'भीली' और मालवा के तटवर्ती जंगलों में रह रहे आदिवासियों की बोली 'वनवासी' इत्यादि बोलियां मालवा की भाषाएं ही हैं। पूर्व दिशा में बेतवा नदी उत्तर पश्चिम में चम्बल नदी और दक्षिण में पुण्य सलिला नर्मदा नदी के बीच का प्रदेश मालवा है। मालवा क्षेत्र मध्यप्रदेश और राजस्थान के लगभग बीस जिलों में विस्तार किए हुए है। इन क्षेत्रों के दो करोड़ से अधिक निवासी मालवी और उसकी विविध उपबोलियों का व्यवहार करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इन्दौर महानगर के मालवी कवियों की रचनाधर्मिता पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

लोकगीतों से किसी देश की संस्कृति और उसके वास्तविक जनजीवन का परिचय प्राप्त होता है। यह प्रवृत्ति आदिम युग से चली आ रही है। आज युग की बदलती हुई परिस्थितियों में गीतों के भीतर नयी रोशनी के चिह्न प्रकट हो रहे हैं। मालवी बोली के कवि युग की छाप को ईमानदारी से अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त कर रहा है। "मालवा की मालवी बोली आवंति प्राकृत और पैशाची प्राकृत का समन्वित रूप है। इस क्षेत्र पर शकों, हूणों, तुर्कों, अंग्रेजों आदि विदेशी और मराठों, राजस्थान के राजपूतों आदि का भी समय-समय पर दीर्घकालीन शासन रहा। शासन की भाषा का प्रभाव क्षेत्र की भाषा पर होता है। अतः आवंति-पैशाची मिश्रित बोली में पूर्वोक्त सभी देशी-विदेशी शासकों की भाषाओं का भी क्रमशः मिश्रण होता चला गया। आज की मालवी उन विभिन्न भाषाओं और ध्वनियों की मिलती-जुलती धाराओं का समन्वित स्वरूप है।"1

"भाषा की दृष्टि से मालवा में मध्यप्रदेश के इन्दौर, उज्जैन, देवास, रतलाम, नीमच, धार का पूर्वी भाग, सीहोर, शाजापुर, विदिशा का पश्चिमी भाग, राजगढ़ जिले के मालवी क्षेत्र आते हैं।" इस सीमांकन का आधार भाषा की समानता के अतिरिक्त खान-पान, जीवन शैली तथा सांस्कृतिक एकरूपता है।"2

मालवा में इन्दौर का स्थान प्रमुख है। यह प्रदेश की औद्योगिक राजधानी के साथ मालवी साहित्य का केंद्र भी है। यहां के कवियों ने मालवी बोली में अनेक रचनाएं की हैं। इस बारे में उपन्यासकार शरद पगारे ने लिखा है, ''मालवी के समस्त कवियों ने मालवी के बदलते तेवरों को रेखांकित किया है।''3

इन्दौर के मालवी कवियों की रचनाधर्मिता

मालवी के प्रायः सभी कवियों की कविताओं में वैयक्तिक भावनाओं का प्राधान्य देखने को मिलता है। मालवी बोली के अधिकांश धरती से जुड़े कवि हैं। इसलिए अपने हित, अपने ग्राम और अपनी प्राकृति के सौंदर्य से कवि बहुत अभिभूत हैं। कवि ओमप्रकाश पण्ड्या की कविता 'आजा म्हारा गांव में' उनकी व्यक्तिमूलक चेतना देखने को मिलती है।

''करो चाकरी सेर में बणी गया उमराव
पण म्हारे है जान से प्यारो म्हारो गांव।4

नरहरि पटेल की अधिकांश मालवी गजलों में उनके अतीत की स्मृतियां हैं। अतीत का 'चेहकता था चटकला' में नरहरि पटेल अपनी स्मृतियों का दोहन करते हुए लिखते हैं

''कसा चेहकता था चटकला कई याद है कि नी याद है
मस्ती में गम्मत रतजगा कई याद है कि नी याद है।''5

लोकगायक नरेंद्र सिंह तोमर अपनी वैयक्तिक चेतना के वशीभूत होकर स्वयं का आलस्य त्यागकर देश में आपसी फूट के कारण आयी गुलामी के विरोध में स्वयं के खड़े होने की बात कहते हैं:

''हिम्मत के मतहार सूरमा, ईस्वर थारे साथ।
किस्मत किस्मत कई करे रे, किस्मत थारा हाते
कांदा रोटी खई खई थारी मत भुरमई रे
आलस त्याग रे।''6

मालवी के कवि और गीताकारों में सामाजिक समस्याओं का अवलोकन मालवी बोली के कवियों में देखने को मिलता है। इस संदर्भ में मालवी बोली के रचनाकार नरहरि पटेल लिखते हैं, ''आज मामूली आदमी, गांव का गरीब, मजदूर, किसान वहीं खड़ा है और इसीलिए उनका लोकमन गुलामी के दिनों में भी इतना दुःखी नहीं था, जितना आज है।''7

मालवी बोली की कवयित्री ललिता राव की कविताओं में सामाजिक समस्याओं का आधिक्य देखने को मिलता है। उनकी काव्य रचना जनजीवन के अधिक समीप है। ललिता रावल की कविता 'नशो' का केंद्रीय भाव यह है कि फसल अच्छी होने पर बड़े किसानों के भण्डार भर गए तथा फसलों की कटाई करने वाले मजदूरों के चूल्हे जल गए परंतु दिन ढले दारू या शराब पीने की आदत और पीकर गाली-गलौज करने वाले पारिवारिक वातावरण को दूषित कर देते हैं।

'मोटा किरसाण हुण का
कोठार भरी गया,
मजूर हुण का घरे
चूलो बाली गया।
पण दिन ढल्या बाद
दाणा दारू वणी गया
मारपीट गाल-गलोच माय
बालक सांस भूली गया।''8

कवि नरेंद्र सिंह तोमर ने बाल विवाह पर केंद्रित कविता 'बणी ने चल्या हो कइं लाड़ा' में सामाजिक समस्या के माध्यम से बाल विवाह जैसी कुप्रथा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है:

''दन पर चाबो पान सुपारी,
आठ बरस की उमर तमारी

छे महीना बस गया मदरसे,
बटुवा में ली बांध कटारी
बाराखड़ी नी जाणी परी
आवे दस लग फाड़ा
बणी ने चल्या हो कई लाड़ा।''9

आनंदराव दुबे ने अपनी कविताओं में अंधविश्वास और कुरीतियों के विरुद्ध पूरी शक्ति से लिखा है। आज जिस दहेज प्रथा के विरुद्ध प्रलापित ढंग से लिखा जा रहा है। वर्षों पहले दुबे जी ने उसके विरुद्ध लिखा था-

''हाथ जोड़ाया, पांव पड़ाया
कीनी है सगाई कबूल
घर धोई ने धन सब धरदयो
अब कई रई भी भूल।''10

मालवी कवियों ने मानवतावाद के पक्ष में भी अनेक कविताएं लिखी हैं। कवि नरेंद्रसिंह तोमर की कविता 'गांव के सरग बणाणो है' में मनुष्य-मनुष्य के बीच भेदभाव और ऊंच-नीच की भावना को समाप्त कर संपूर्ण मानव में एकता के सूत्र की बात कही है:

''ऊंच नीच को नातो तोड़ो
भेद भाव को मायो फोड़ो
भागरिथ बण प्रेम की गंगा घर-घर लाणो है
गांव के सरग बणाणो है।''11

नरहरि पटेल की गजलों में संवेदनशीलता का भाव देखने को मिलता है। उन्होंने अपने काव्य में लोक चिंता को स्थान को दिया है। कभी एक साथ बैठकर रोटी खाने वालों के बीच आज दरारें पड़ गयी हैं। आपसी प्रेम धराशाही हो गया है। नरहरि पटेल इसी भाव पर केंद्रित विचार अपनी गजल में प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं

''कंटी सी दांव से रोटी बदलग्यो रिस्तो क्यूं
पड़ीग्यो प्रेम को झण्डो जरा विचार करो।''12

उनकी गजल में मालवी भाषा में प्रेम सौंदर्य की अनूठी छटा उभरी है:

''नजर ठगी की ठगोरी, हे आस खिड़की में

तरस टंगी की टंगीरी, ने प्सास खिड़की में।''13

नरहरि पटेल अपनी गजलों की भाषा के संबंध में स्वयं लिखते हैं, ''मैंने साक्षी भाव से इन रचनाओं में आसपास यह सब घट रहा है, उसे ही अपनी बोली में व्यक्त करने की कोशिश की है।''14

नरहरि पटेल की गजलों की भाषा ठेठ देसी होकर सहजता के साथ पाठकों के मन का स्पर्श करती है। पटेल की गजलों में प्रतीकों की भरमार भी देखने को मिलती है। वे लिखते हैं:

''अपनी पटेल पदवी है प्रेम की गुलाम
लो प्रेम से रखोगे जागीर बांट दो।''15

निष्कर्ष

मालवा के रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में लोक व्यवहार तथा मावल के रीति-रिवाज के साथ ही मालवा की संस्कृति, जीवनशैली, लोक व्यवहार को भी अभिव्यक्त किया है। मालवा के लोगों की राष्ट्रभक्ति को भी चित्रित किया है। लोकभाष में जनजागृति लाने में भी कवियों ने अपना योगदान दिया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 मालवी भाषा और साहित्य: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ 2

2 मध्यप्रदेश का सांस्कृतिक परिचय, कृष्ण गोपाल व्यास, जल चैपाल, सप्रे संग्रहालय, संस्करण 2013, इंडिया, हिन्दी वाटर पोर्टल

3 निमाड़ की मारी: मालवा की छांव, त्रिपदगा क अवगाहन: आलोक, डा॰ शरद पगारे, हिन्दी परिवार प्रकाशन, इन्दौर पृष्ठ 5

4 निमाड़ की माटी: मालवा की छांव, संपादक: हरेराम वाजपेयी, हिन्दी परिवार प्रकाशन, इन्दौर पृष्ठ 13

5 गुलमोनी धरती नरहरि पटेल, दिशा कम्युनिकेशन, इन्दौर, पृष्ठ 3

6 पगडण्डी, संपादक: नरहरि पटेल, दिशा कम्युनिकेशन, इन्दौर पृष्ठ 29

7 पगडण्डी, यह पगडण्डी जीवन का राजमार्ग बनी, नरहरि पटेल, भूमिका, दिशा कम्युनिकेशन, इन्दौर

8 कविता नशो, ललिता रावल, फाग घणो पोमायो है, रावल प्रकाशन, इन्दौर, पृष्ठ 63

9 निमाड़ की माटी: मालवा की छांव, संपादक हिन्दी परिवार, पृष्ठ 35

10 रामाजी रई ग्या ने रेल जाती री, काव्य संकलन: आनंदराव दुबे मालवी जाजम प्रकाशन, इन्दौर पृष्ठ 18-19

11 पगडंडी, संपादक: नरहरि पटेल, प्रकाशक: दिशा कम्युनिकेशन, पृष्ठ 31

12 थोड़ी घणी: गजल संग्रह नरहरि पटेल, दिशा कम्युनिकेशन, इन्दौर पृष्ठ 21

13 झुमको, मालवी कविता गीत गजल, नरहरि पटेल, दिशा कम्युनिकेशन, इन्दौर पृष्ठ 43

14 सिपरा किनारे: भूमिका: नरहरि पटेल, दिशा कम्युनिकेशन, इन्दौर

15 थोड़ी घणी, मालवी गजलें, नरहरि पटेल, दिशा कम्युनिकेशन, इन्दौर, पृष्ठ 15